लिखना
प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ कुछ अनुभव

पारुल बत्रा दुग्गल

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में लेखन को नवाचार के रूप में अपनाने की ज़रूरत को रेखांकित किया गया है। यद्यपि आमतौर पर शिक्षकों का इस बात पर ज़ोर होता है कि बच्चे सही तरीक़े से लिखें। लिखने के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता है। मशीनी रूप से शुद्ध लेखन की माँग विचारों को अभिव्यक्त करने में बाधा बनती है।

प्रस्तुत लेख में भाषा शिक्षण की शुरुआती कक्षाओं में लेखन को देखने के नज़रिए और उसे समझने की कोशिश की गई है।

पारुल ने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ अपने लेखन-शिक्षण अनुभवों को लेखन की परम्परागत धारणाओं के बरअक्स तौलने और उनकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। इस मक़सद के लिए उन्होनें ने बाल-लेखन के कई उदाहरण लेते हुए अपनी बात को रखा है। यह लेख, शुरुआती कक्षाओं में किस तरह से लेखन की शुरुआत की जाए और कैसे सृजनात्मक लेखन के लिए पुस्तकालय की मदद ली जाए जैसे विषयों कें बारे में चर्चा करता है। सं.

अकसर शिक्षक और अभिभावक यह शिकायत करते दिखते हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में उनके बच्चों को ढंग से हिन्दी पढ़ना और लिखना नहीं आता। कुछ बच्चे तो वर्णमाला को पहचानने में ही पूरा साल लगा देते हैं वहीं कुछ एक साल में वर्णमाला सीखने के बाद अक्षरों को जोड़कर अटक-अटक कर पढ़ते रहते हैं, और मात्राओं को भी नहीं पहचान पाते। लिखने के नाम पर वे बोले गए या बोर्ड पर लिखे गए शब्दों को देखकर लिख लेते हैं। या प्रश्नों के तयशुदा उत्तर लिख लेते हैं, लेकिन मन से कुछ लिखने को कहो तो मुँह ताकते नज़र आते हैं। या कहते हैं कि आप ही बता दीजिए कि क्या लिखना है?

अधिकतर शुरुआती प्राथमिक कक्षाओं में लिखने को लेकर कुछ इस तरह की प्रक्रियाएँ होती हैं:

- आड़ी-खड़ी रेखाएँ बनाना
- वर्ण या मात्रा लिखना
- बोर्ड से देखकर लिखना
- शब्द से वाक्य बनाना
- दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखना
- श्रुतलेख
- सुलेख
- चित्र देखकर लिखना
- याद किया हुआ लिखना;
- दिए हुए विषय पर निबन्ध, पत्र, आदि लिखना।

यहाँ मान लिया जाता है कि एक ख़ास ढर्रे में बाँधकर ही बच्चों को लिखना सिखाया जा सकता है। इसके लिए बच्चों को इस ख़ास क्रम में लिखना सिखाया जाता है। जब बच्चे स्कूल आते हैं तो उनकी फ़ाइन मोटर ग्रिप (पेंसिल पकड़ने वाली ग्रिप) विकसित नहीं हुई होती है। इसके लिए उन्हें आड़ी और खड़ी रेखाएँ काग़ज़ पर उकेरनी होती हैं। इसके बाद वर्णमाला की आकृतियाँ बनाना सीखना होता है। लेकिन यह बेहद नीरस होता है और सही आकृति न बना पाने पर उसे बार-बार मिटाना और फिर से लिखना होता है। इसमें कई बच्चे शुरुआत में ही निराश हो जाते और सोचते हैं कि वे अब कभी भी

काश। अगर में तितली होती तो में बाघ
मे जाती और फूलों पर बैठती वहीं फूलों की
सुगन्ध लेती व सभी लोग मुझे पकड़ने की
कोशिश करते वह मैं फट से उड़ जाती।

काश। अगर में तितली होती तो में ऊपर
उड़ती वहीं में [redacted] फूलों पर बैठ जाती।

काश अगर मे तितली होती तो मे किसी
के भी ऊपर बैठ जाती।

काश अगर मे तितली होती तो मेरे बड़े मज़े
होते।

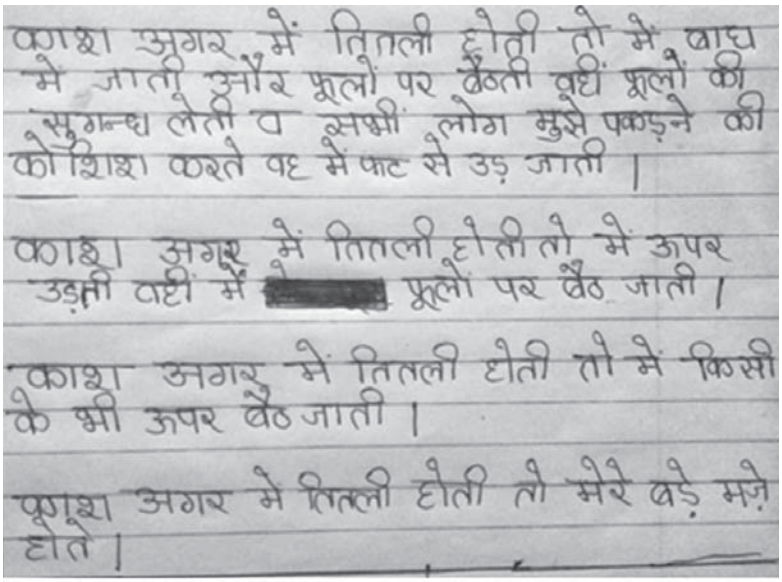

चित्र 1. बालिका का लेखन ‘अगर मैं तितली होती तो...’

सही आकृति बनाना नहीं सीख सकेंगे। फिर उन्हें बिना मात्रा वाले कुछ सन्दर्भहीन शब्द लिखना सिखाया जाता है जैसे– गमला, अदरक, रमन, चल, घर... आदि। और यह माना जाता है कि बच्चे मात्रा के साथ पूरे शब्द नहीं लिख सकेंगे। इसके बाद अनिवार्य रूप से ‘आ’ की मात्रा के साथ शुरू होने वाले शब्द जैसे- ताला, माला, लाला, आदि सिखाए जाते हैं।

स्कूल में किसी भी बच्चे का अधिकतर समय कुछ इसी तरह की प्रक्रियाओं में ही गुज़रता है। बच्चे जिस तरह के वाक्य बोलते हैं और जिन शब्दों से दैनिक जीवन में परिचित भी हैं, लेखन की बात आते ही उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है। बच्चों को किसी विषय पर अपने विचार बनाने, कहने या लिखने के लिए कोई जगह भाषा शिक्षण की इस विधि में नहीं होती है। लेकिन असल में हम तो पढ़ना-लिखना सीखते ही इसलिए हैं ताकि अपनी बात को व्यवस्थित और सुसंगत ढंग से मौखिक और लिखित रूप में अभिव्यक्त कर उन्हें लोगों तक पहुँचा सकें।

बच्चों को लिखना सीख लेने के बाद भी किस विषय पर लिखने के लिए कहा जाता है? अधिकांशतः लेखन के लिए प्राथमिक कक्षाओं में ‘मेरा स्कूल’, ‘राष्ट्रीय त्योहार’, ‘विज्ञान के चमत्कार’, ‘मेरी रेल यात्रा’, ‘पर्यावरण प्रदूषण’ और ‘गाय’ जैसे विषयों पर निबन्ध लिखने के लिए दिए जाते हैं। विषय के ढाँचे से बाहर जाकर कुछ सृजनात्मक विचारों को ला पाना मुश्किल हो जाता है। अगर कक्षा के सभी बच्चों से ‘मेरी शाला’ पर निबन्ध लिखवाया जाए तो अमूमन एक से ही विचार आएँगे। इसके विपरीत अगर बच्चों को कहा जाए कि ‘अगर तुम कंघी, तितली, मच्छर, फूल, कटोरी या जूता होते तो क्या होता?’ या ‘अगर टॉफ़ियाँ पेड़ पर लगतीं तो क्या होता?’ तो हर बच्चे की अपनी एक अलग ही कहानी होती। यह लेखन की कला विकसित करने की तरफ़ एक छोटा प्रयास होता जिसमें विचारों की खुली आवाजाही होती। जब लिखने में कल्पनाएँ उड़ान भरेंगी तभी हर बच्ची आगे जाकर एक लेखिका बन सकेगी। यहाँ ऐसी ही एक बच्ची की कल्पना और सृजनशीलता उसके लेखन में दिखती है। (चित्र 1)

वैसे हम भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होते हैं लेकिन हममें कई ग़ैर-जन्मजात कौशलों को भी सीखने की क्षमता है। पढ़ने और लिखने का कौशल इन ग़ैर-जन्मजात कौशलों का हिस्सा है। इन्हें उतना ही स्वाभाविक रूप से सिखाया जाना ज़रूरी है जैसे हमारा सामाजिक वातावरण हमें हमारी मातृभाषा बोलना सिखा देता है। हालाँकि इन्हें सीखने के लिए अनुकूल वातावरण के साथ-साथ अभ्यास और सायास निर्देश भी आवश्यक हैं।

पढ़ना और लिखना सीखने में अवधारणात्मक

(विषयवस्तु) और प्रक्रियात्मक (कोई भी प्रक्रिया कैसे की जाती है, यह समझना और उसे बार-बार करके सीखना, जैसे– कार चलाना, रोटी बनाना या बुनाई), दोनों तरह का ज्ञान आवश्यक है। लेकिन हमारी कक्षाओं में पढ़ने-लिखने के एक ही पक्ष यानी प्रक्रियात्मक ज्ञान पर ही ज़ोर दिया जाता है जिसमें बार-बार दोहराव यानी किसी चीज़ को एक से अधिक बार पढ़ने, याद करने और लिखकर दोहराने पर बल दिया जाता है। यह माना जाता है कि अभ्यास से लगातार सुधार आता है। तथ्यों को बार-बार दोहराना या रटवाना और लिखने के नाम पर बार-बार लिखने का अभ्यास कराया जाता है। इस प्रक्रिया में भी विचारों से ज़्यादा शुद्ध और सुन्दर लेखन को ही महत्त्व दिया जाता है। क्या ड्रिल 'समझ' पैदा करने में कोई मदद करता है? पढ़ने और लिखने के वास्तविक मायने 'समझकर पढ़ना' और 'लिखकर समझा पाना' भी हैं, जिसमें पढ़ने और लिखने के साथ अर्थ-ग्रहण करने की प्रक्रिया भी लगातार चलती रहती है। क्या ड्रिल से समझ बन सकती है? यदि बच्चों की बात करें तो उन्हें इस तरह की 'यांत्रिक प्रक्रियाओं' (जैसे– वर्णमाला को दस बार लिखना) में कोई मज़ा नहीं आता।

बच्चों के चित्र और शुरुआती लेखन

मैं अपने कक्षा के अनुभवों से यह समझ पाई कि हर बच्चा लिखने की अपनी अवस्था में होता है और लिखने की यह शुरुआत स्कूल आने के काफ़ी पहले चित्र बनाने के माध्यम से शुरू हो जाती है। अकसर बच्चों की इन रचनाओं को हम महज गूदागादी (doodling) कहकर अनदेखा कर देते हैं क्योंकि उनमें हमें कोई मतलब समझ नहीं आता। (चित्र 2)

गूदागादी भी लिखने की एक ज़रूरी अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे बड़ों को देखकर उनकी तरह लिखने का प्रयास कर रहे होते हैं– लम्बे वाक्य एक लाइन में बाएँ से दाएँ, लिखने को वे

चित्र 2. प्रारम्भिक चित्र और लेखन

पकड़ रहे होते हैं। अकसर वे 'डूडलिंग' करते समय उस वाक्य को बोल भी रहे होते हैं जिसे वे लिखने का प्रयास कर रहे होते हैं। 'डूडलिंग' लिखना सीखने के लिए ज़रूरी है क्योंकि इससे बच्चों के मन में लिखने के बारे में कुछ बुनियादी अवधारणाएँ बनती हैं और वे स्वतंत्र लेखन के आदी बनने लगते हैं। ये बूझ या अबूझ रचनाएँ ही लेखन की शुरुआत है।

उदाहरण के लिए, नीचे दिए गए चित्र 3 को ही देखिए। इसमें बच्चे ने दो नीली रेखाओं के भीतर क्या बनाया है कहना कुछ मुश्किल है, लेकिन बच्चा बता पाता है कि ये दरअसल नदी में तीन मछलियाँ और एक शार्क (जो तीन नीली आकृतियों के नीचे) है और शार्क, मछलियों को काट रही है। (चित्र 3)

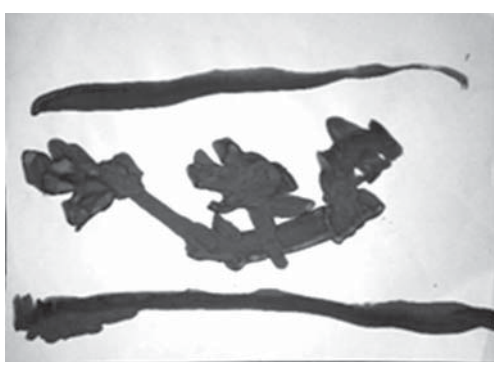

चित्र 3. तीन मछलियाँ और एक शार्क

इसी तरह चित्र 4 है जिसमें बच्चे से बात करने पर पता चलता है कि आम के पेड़ पर आम लगे हैं और सेब के पेड़ पर सेब। यानी बच्चे को यह स्पष्ट है कि उसने क्या बनाया है, और यह भी कि वह अपने ज़ेहन में आए विचार

चित्र 4. आम का पेड़ और सेब का पेड़

को लिखित रूप में सम्प्रेषित करने की क्षमता रखता है। वह, जो उसने बनाया है, उसपर बातचीत करना चाहता है और यह भी कि लोग उसकी अभिव्यक्ति में दिलचस्पी लें। लेकिन बच्चे ने क्या बनाया है उसके ज़रिए वह क्या दर्शाना चाहता है उस तक पहुँचने के लिए बच्चे से बात करना ही एकमात्र ज़रिया है।

इसलिए बच्चों से उनके द्वारा की गई गूदागादी, उनके द्वारा बनाई आकृतियों व चित्रों पर बात करना ज़रूरी है। गूदागादी, चित्रों पर की गई बातचीत उनको न केवल और लिखने के लिए और उसपर बातचीत करने के लिए प्रेरित करती है, बल्कि धीरे-धीरे उनकी यह समझ भी पुख़्ता होती है कि कहाँ लिखना है, कितनी जगह चाहिए होगी! अलग-अलग तरह के संकेत, आकार, आदि हो सकते हैं, और आकारों को छोटा-बड़ा भी किया जा सकता है जो लिखने की औपचारिक शुरुआत के लिए बहुत मददगार होता है।

तब धीरे-धीरे चित्रों से वर्ण लेखन पर आ सकते हैं जैसे– अगर उनके चित्रों पर शिक्षिका लेबलिंग (चित्र को नाम देना या व्याख्या कर देना) कर दे तो वे शिक्षिका के लिखे हुए को देखकर हू बहू लिख सकते हैं और अपने चित्र को एक सार्थक नाम भी दे सकते हैं, शुरुआत वर्ण की बजाय शब्द से करना ज़रूरी है। जैसे– यहाँ बच्चे ने बंदर का चित्र बनाया और साथ में शिक्षिका ने 'बंदर' लिख दिया और बच्चे ने शिक्षिका के लिखे हुए को देखकर नीचे 'बंदर' लिखा। (चित्र 5)

इस तरीक़े से शिक्षिका बच्चों के मन की बात को ही शब्द दे रही होती है। इससे बच्चे यह समझने लगते हैं कि चित्र भी अपनी बात कहने का एक माध्यम हो सकते हैं। उनके मन में चीज़ों, व्यक्तियों और घटनाओं की जो छवि होती है उसे वे चित्रों में उकेरने का प्रयास करते हैं। निश्चित तौर पर ये वही चीज़ें होती हैं जिनसे उनका जुड़ाव होता है या जिनका उनके मन पर गहरा प्रभाव होता है। एक तरह से यह उनके अनुभवों के प्रतीक ही होते हैं। शिक्षिका का बच्चे के चित्र पर उससे पूछकर 'बंदर' लिखना, लिखने के कार्यात्मक प्रयोग को तो दर्शाता ही है साथ ही बच्चे के मन में लिखने की अवधारणा भी उभरने लगती है।

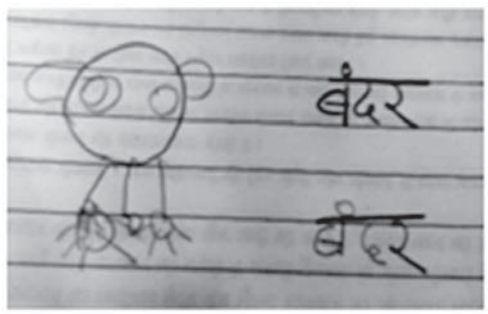

चित्र 5. बंदर

यहाँ चित्र लेखन के द्वारा बच्चे के मन में यह समझ भी विकसित होती है कि बोलने के अलावा लिखना भी अपनी बात कहने का एक तरीक़ा हो सकता है। प्राथमिक कक्षाओं में 'शुरुआती कक्षाओं' (पहली और दूसरी) में पढ़ाने वाले शिक्षकों का इस चित्र लेखन को पढ़ने-लिखने की तैयारी के रूप में देखना आवश्यक है।

चित्र बनाने के साथ

चित्रों और गूदागादी के बाद कुछ ऐसी रचनाएँ मिलेंगी जिनका अर्थ बच्चा ही बता पाएगा। उसने अपनी तरफ़ से एक पूरी बात

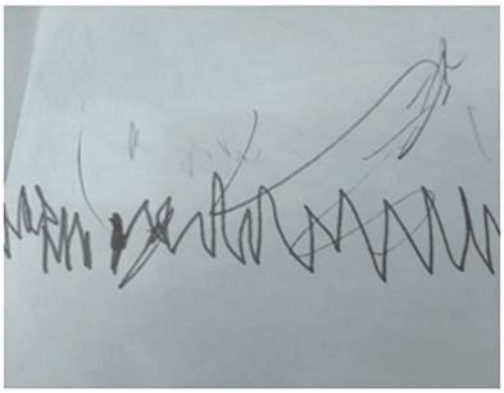

चित्र 6. गूदागादी भी लेखन की शुरुआत है

कहने की कोशिश की है। यह हमारे लिए अर्थपूर्ण नहीं होता, लेकिन बच्चे के मन में निश्चित तौर पर इसका एक अर्थ होता है और हम इस अर्थ तक पहुँच सकें इसके लिए हमारा बच्चे से बात करना आवश्यक हो जाता है।

लिखने के लिए ज़रूरी है कि बच्चे ने चित्र बनाने के साथ क्या बनाया है उसे लिखने का प्रयास भी करें। शुरुआती दौर में यह गूदागादी

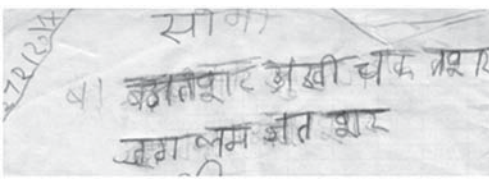

चित्र 7. प्रारम्भिक वाक्य लेखन

जैसा दिखता है लेकिन अक्षरों और शब्दों को सीखने के साथ यह बाक़ायदा एक पूरी बात में बदलते हुए दिखता है।

बच्चे के विचार या कक्षा में हुई बातचीत भी लिखने के लिए विचार मुहैया कराती है। जैसे, कभी कक्षा में किसको कौन-सी मिठाई पसन्द है पर चर्चा हुई, तो मुझे लड्डू पसन्द हैं और मेरे दोस्त को जलेबी, दोनों के नाम के साथ मिठाई लिखा जा सकता है। साथ ही बच्चों को कुछ ऐसे वाक्यों पर काम करने के लिए दिया जा सकता है जिसमें वाक्य संरचना समान हो और एक या दो शब्द बदल रहे हों, जैसे–

आज मैंने रास्ते में पेड़ देखा।

आज मैंने रास्ते में पहाड़ देखा।

आज मैंने रास्ते में नाला देखा।

या फिर किसी कहानी के शीर्षक में अपना नाम रखकर देखो-

धानी के तीन दोस्त
सलमान के तीन दोस्त
आयशा के तीन दोस्त
रिमशा के तीन दोस्त

इससे बच्चे भाषा और वाक्य संरचना से परिचित होते हैं और एक-दो शब्दों के उलटफेर के साथ आसानी से अपनी बात कह पाते हैं।

बातचीत और स्वतंत्र लेखन

कृष्ण कुमार ने अपनी पुस्तक *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में कहा है, "अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन से परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिए।" (अध्याय 4, पृष्ठ 49) जैसे, किसी कहानी पर चर्चा करने के बाद उससे कोई नई कहानी बनाने के सुराग़ मिल सकते हैं या फिर कक्षा के बच्चों के किसी विषय या घटना से जुड़े अनुभवों को सुनने के बाद बच्चों को उन्हें लिखने को कहा जा सकता है। बातचीत करने से लेखन के लिए ख़ाका भी मिल जाता है कि क्या-क्या हुआ, क्या-क्या हो सकता है, या फिर क्या-क्या देखा, आदि। किसी चित्र पर बातचीत करके उसके बारे में अपने विचार लिखे जा सकते हैं। इस तरह किसी मुद्दे पर दूसरों के विचार सुनने से और बातचीत करने से नए विचार बनते हैं।

एक बार दूसरी औऱ तीसरी कक्षा के बच्चों को अपने मित्र, पसन्दीदा चीज़ या भाई-बहन

को अपने मन के विचार लिखकर बताने को कहा गया। बच्चों ने अपने मन की बातें लिखीं। जो बच्चे लिखना सीखने की शुरुआत कर रहे थे उन्होंने भी अपने मन की बात को लिखने की कोशिश की।

कक्षा 2 के एक बच्चे ने लिखा-

घोड़ा जंगल पर रहते है
घोड़ा चने खाते है
घोड़े डोड़ ने बहुत तेज है
घोड़े पे सबरी कार ते है,

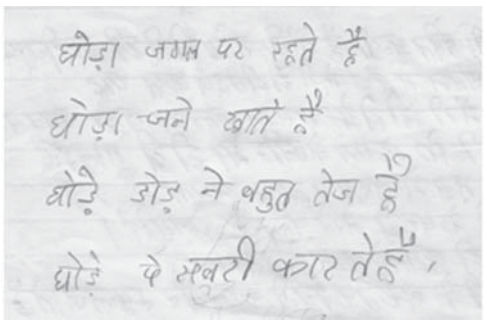

चित्र 8. घोड़े पर विचार

यहाँ बच्चे ने मानक वर्तनी का उपयोग नहीं किया है, लेकिन वह घोड़े के बारे में जो जानता है वह बता रहा है और उसे बताने की उत्कण्ठा भी झलकती है। ज़रूरी यह है कि बच्चे में अपनी बात को लिखकर बताने की इच्छा बनी रहे। यहाँ बहुवचन और एकवचन की अवधारणा बन चुकी है लेकिन उसका प्रयोग कैसे करना है, यह सीख रहा है। पहले दो वाक्यों में घोड़ा लिखा है और बाद के दो वाक्यों में घोड़े। बच्चे के लेखन में वर्तनी की 'अशुद्धियों' को निस्सन्देह नज़रअन्दाज करना चाहिए। वर्तनी की ये अशुद्धियाँ बच्चे के जीवन में स्थाई नहीं रहेंगी। ये उसके लिखना सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा मात्र हैं।

पुस्तकालय की मदद से लेखन

एक अन्य सन्दर्भ में भोपाल शहर के एक सरकारी स्कूल में कक्षा 2 से 5 तक की बालिकाओं के साथ लेखन की कुछ गतिविधियाँ की गईं। इनमें से लगभग सभी लड़कियों को पढ़ना आता था और कक्षा 2 और 3 की कुछ लड़कियाँ ऐसी थीं जो अभी उतने अच्छे तरीक़े से लिख नहीं पाती थीं। इन बच्चियों के साथ कक्षा में पढ़ने-लिखने को लेकर परम्परागत तरीक़े से ही काम हुआ था और इन्होंने हाल में अपने स्कूल प्रांगण में लाइब्रेरी खुलने के बाद कुछ कहानियों और कविताओं की किताबें और बाल-पत्रिकाएँ पढ़ना शुरू किया था। मैंने इन बच्चियों के साथ किताबों को लेकर कुछ गतिविधियाँ करना तय किया।

पहले कुछ दिनों तक बालिकाओं को कहानियाँ सुनाईं और उन्हें ख़ूब सारे चित्र बनाने दिए जिससे वे मुझसे और लाइब्रेरी की किताबों से थोड़ा परिचित हो जाएँ।

फिर बालिकाओं के समूह बनाए गए। एक समूह में कक्षा 2 से 5 की एक-एक बच्ची थी, इस तरह एक समूह में कुल चार बालिकाएँ थीं। कुल तीन समूह बने। हर समूह को एक किताब दी गई और उन्हें बताया गया कि किताब पढ़ने के बाद क्या करना है।

समूह 1

किताब का नाम : *छोटी चींटी काम बड़ा* (प्रकाशन– राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली)

यह एक चित्रकथा है जिसमें पुलक विश्वास के बनाए हुए चित्र हैं और कोई भी कहानी लिखी हुई नहीं है।

सभी बालिकाओं को समूह में चित्रकथा देखने के बाद आपस में चर्चा करके इस किताब के लिए एक कहानी लिखनी थी और उसे एक नया शीर्षक भी देना था।

उन्होंने जो लिखा उसे चित्र 9 में पढ़ सकते हैं।

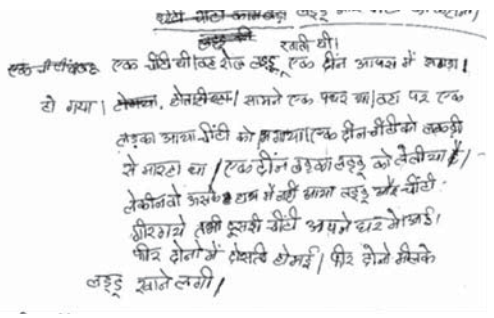

चित्र 9. लड्डू और चींटी की कहानी

समूह 2

किताब का नाम : *मेरा घर* (प्रकाशक– तूलिका)।

यह दो बच्चों के बीच का संवाद है जिसमें एक बच्चा अपने घर के विभिन्न हिस्सों (खिड़की, दरवाज़े, छत आदि) के बारे में बताता है कि किस तरह उसका घर सबसे अच्छा है।

सभी बालिकाओं को समूह में कहानी पढ़ने के बाद कहानी के फ़ॉर्मेट के अनुसार ही अपने घर का विवरण लिखना था।

चित्र 10 और 11 'मेरे घर' के दो उदाहरण देखें।

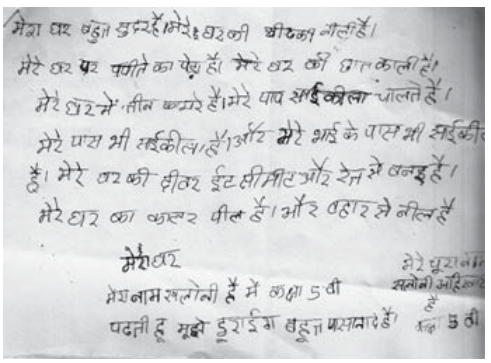

चित्र 10. उदाहरण 1 : घर

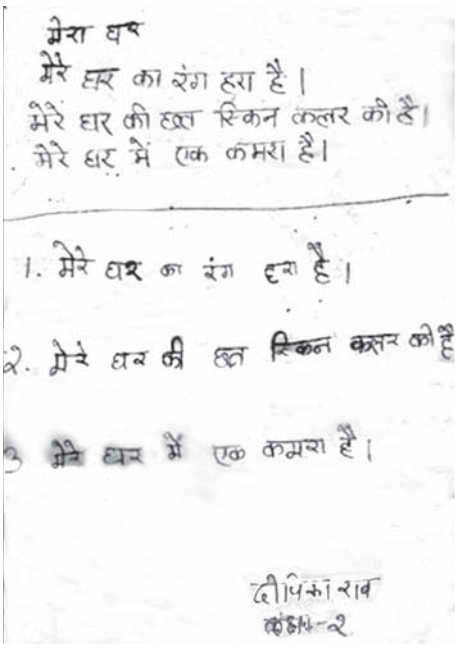

चित्र 11. उदाहरण 2 : घर

समूह 3

किताब का नाम : *स्कूल में प्रणव का पहला दिन* (प्रकाशक– एकलव्य)।

यह किताब एक बच्चे, प्रणव के बारे में है जो पहली बार स्कूल गया और उसे एक दोस्त भी मिला।

सभी बालिकाओं को समूह में कहानी पढ़ने के बाद आपस में चर्चा करके कहानी के फ़ॉर्मेट के अनुसार ही स्कूल में अपने पहले दिन को याद करके लिखना था कि जब वे पहले दिन स्कूल आई थीं तो उनको कैसा महसूस हुआ और उनके साथ क्या घटनाएँ घटी थीं?

चूँकि ये बालिकाएँ इस तरह का काम पहली बार कर रही थीं इसलिए उन्हें समझाने में, व्यवस्था बनाने में और उनके समझने में समय लगा। बच्चों को एक-दूसरे की बात सुनने और चर्चा करने में समय लगा। ज़्यादातर किसी एक या दो के ही विचार आए, बाक़ी शान्त थे। उन्हें कलर, पेंसिल, आदि एक-दूसरे से साझा करने की आदत नहीं थी, और उन्होंने लड़ने में भी समय बिताया। लेकिन धीरे-धीरे उनकी समझ

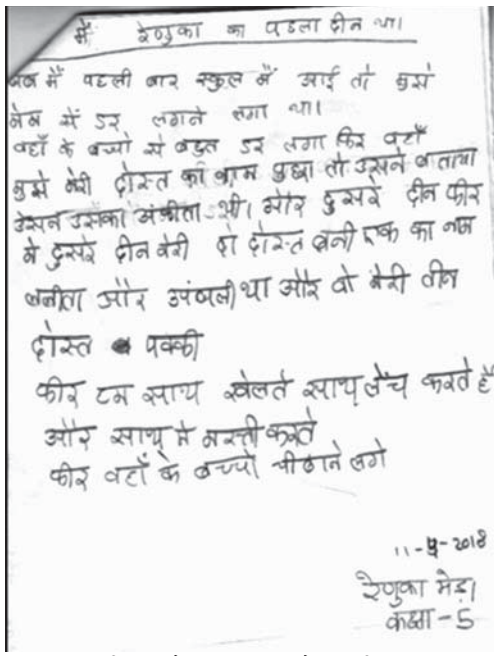

चित्र 12. रेणुका का स्कूल में पहला दिन

में आया कि ऐसा नहीं करना है क्योंकि उनकी शिकायतों को महत्त्व नहीं दिया गया।

जैसा कि उदाहरण से देख सकते हैं कि बच्चियों ने कार्य को समझकर बख़ूबी अपनी बात रखी। हालाँकि शुरुआत में थोड़ा समय ज़रूर लगा। इन सभी बालिकाओं को पढ़ना-लिखना तो आता था पर कुछ बालिकाएँ सीखने की प्रक्रिया में थीं। लिखने में काफ़ी ग़लतियाँ थीं, लेकिन पढ़ने पर सभी विचार स्पष्टता से समझ आते थे।

यह भी देखा गया कि चर्चा में कम बोलने या कम सहभागिता रखने वाली बालिकाओं ने लिखने में अधिक रुचि दिखाई और उनका लेखन ज़्यादा समृद्ध रहा।

कक्षा 2 की एक बच्ची जो लिख नहीं पा रही थी तो उसके विचारों को मैंने उसकी भाषा में लिख दिया और फिर उसे वही वाक्य लिखने को दिए तो वह ज़्यादा अच्छी तरह से लिख पाई। इसका उदाहरण चित्र 11 है (दीपिका राव कक्षा 2)। इस तरह उनकी टीचर से यह भी चर्चा की गई कि जो बच्चे लिख नहीं पा रहे, उन्हें उनके विचारों से ही लिखने की शुरुआत कराई जा सकती है क्योंकि वे उनके ज़्यादा निकट होंगे।

उपर्युक्त उदाहरण बच्चे के शुरुआती लेखन यानी चित्रांकन और गूदागादी से लेकर स्वतंत्र अभिव्यक्ति तक लेखन के कुछ चरणों को दिखाते हैं और यह भी दिखाते हैं कि किस तरह लेखन एक सीधी प्रक्रिया न होकर घुमावदार प्रक्रिया है जिसे वर्णमाला, मात्रा, शब्द और वाक्य जैसी एकतार प्रक्रिया से परे हटकर देखने की ज़रूरत है। इन कक्षाओं में बच्चों को लेखन के मौक़े दिए गए और लेखन से पहले या तो उन्होंने ख़ुद कहानी पढ़कर चर्चा की या उन्हें कहानी सुनाई गई। साथ ही यहाँ बाल साहित्य के माध्यम से उन्हें लेखन का सार्थक मौक़ा प्रदान किया गया और कहानी या उससे जुड़े हुए अनुभव पर लिखने के लिए कहा गया। जिन बच्चों के पास विचार तो थे लेकिन वे लिख नहीं पाए तो शिक्षिका ने ख़ुद ही उनकी बात को लिख दिया।

यहाँ ज़रूरत थी तो बस लेखन के अवसर, अभ्यास और 'ग़लतियों' पर सही प्रतिक्रिया देने और बच्चों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की। भाषा की कक्षाओं में हमें लगातार इस तरह के अवसरों को बनाए रखना होगा ताकि हमारी प्राथमिक कक्षाओं में यह प्रक्रिया सरल, स्वाभाविक और सार्थक रूप से हो सके। तभी हम बच्चों को सृजनात्मक लेखन की ओर अग्रसर होता देख पाएँगे।

सन्दर्भ

टिमोथी, शानाहन (1988), *द रीडिंग टीचर*, इंटरनेट से-https://www.researchgate.net/publication/280568074_reading_and_Writing_Relationships_and_their_Development

कृष्ण कुमार (2015) *बच्चे की भाषा और अध्यापक, एक निर्देशिका* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

रीडिंग फॉर मीनिंग (2008), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

मुकुन्दा, कमला (2009), *स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?* एकलव्य, भोपाल

लिखने की शुरुआत : एक संवाद, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

कृष्ण कुमार (2019), *पढ़ना, ज़रा सोचना, ज़ुगनू,* तक्षशिला का प्रकाशन, भोपाल

कुमारी शारदा, *प्राथमिक शिक्षक* अक्तूबर 2007, 'सही मायनों में आख़िर पढ़ना है क्या', एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

'भाषा के व्यापक उद्देश्य' विषय पर सागर यूनिवर्सिटी में मनोज कुमार का व्याख्यान।

पारुल बत्रा दुग्गल पिछले सात वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल में काम कर रही हैं, और फ़िलहाल सरकारी स्कूल के शिक्षकों और बच्चों के साथ शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को समझने में जुटी हैं। बच्चों के लिए कई किताबें प्रकाशित। बाल-साहित्य और बच्चे कैसे सीखते हैं में गहरी दिलचस्पी है।

सम्पर्क : parul.duggal@azimpremjifoundation.org